दिनांक :- 14-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा (अतिथी शिक्षक)

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

सेमेस्टर :- छः

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन की क्रांति

इसी बीच युआन ने नमक-कर को बंधक रखकर विदेशी सहायता प्राप्त कर लिया। संसद और कुओमिन्ताँग ने इसका घोर विरोध किया। 2 जुलाई 1913 को सनयात सेन ने एक तार द्वारा युआन को इस्तीफे की माँग की। इस पर युआन ने उसे रेलवे विभाग के संचालक के पद से हटा दिया। 14 जुलाई को नानकिंग के लोगों

ने अपने को युआन की सरकार से स्वतंत्र घोषित कर दिया पाँच और प्रांतो ने इसी तरह की घोषणा की इस पर युआन ने विद्रोहियो को दबा किया उसके नेता भाग गए। 8 अगस्त 1913 को सनयात सेन भी देश छोड़कर जापान भाग गया। विद्रोहो का दमन करने के बाद युआन ने अपनी स्थिति दृढ़ करने का प्रयास किया। उसने सम्पूर्ण देश में आतंक का शासन कायम कर लिया। और विरोधियो की हत्याएँ की जाने लगी। इस - धमका कर और रिश्वत देकर संसद के सदस्यो को उसने अपनी ओर मिला लिया और अपने को पांच वर्ष के लिए गणराज्य का अध्यक्ष निर्वाचित करा लिया। 10 अक्तूबर 1913 को उसने इस पद की शपथ ग्रहण करली। उसने अपनी सैनिक शक्ति बढ़ा ली और प्रमुख स्थानो पर अपने आदमियो को रख दिया। नवम्बर 1913 में उसने कोमिनतांग दल को अवैध घोषित कर दिया। दल के सदस्य गिरफ्तार

कर लिए गए। कुछ भागकर विदेश चले गए। फलतः संसद अपने इच्छानुसार एक शासन विधान तैयार किया उसके निर्माण के लिए उसने एक संविधान सभा का निर्माण किया। इसके सभी सदस्य युआन के समर्थक थे। शासन विधान में राष्ट्रपति को सर्वोपरि माना गया। उसके पद की अवधि दस वर्षों के लिए निश्चित की गई यह भी कहा गया कि आवश्यकता पड़ने पर वह अपनी अवधि बढ़ा भी सकता था। उसे अपना उत्तराधिकारी चुनने का भी अधिकार दिया गया। प्रधानमंत्री को राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी बतलाया गया। संसद की जगह एक राज्य सभा (Council of State) कायम की गई। इसका काम राष्ट्रपति को परामर्श देना था। मार्च 1914 में यह शासन-विधान लागू किया। युआन तानाशाह की तरह शासन करने लगा।

विरोधियों को दण्ड दिया गया। समाचार-पत्रों तथा राष्ट्रीय पुस्तकों पर कठोर नियंत्रण लगाया गया।

युआन अब सम्राट बनने के लिए आग्रह बनने का स्वप्न देखने लगा। वह यह चाहता था कि जनता के प्रतिनिधि स्वयं उससे सम्राट बनने के लिए आग्रह करें। राज्य सभा में उसके समर्थक ऐसा ही चाहते थे। निरंकुशता के यत्ता को लोकप्रियता के आवरण से ढकने का यह सफल प्रयास था। सभा ने उसे सम्राट बनने के लिए आग्रह किया। युआन ने सम्राट बनने के लिए जैसे ही राजतिलक की तैयारी आरम्भ की, वैसे ही दक्षिण चीन की जनता ने विद्रोह कर दिया। वहाँ के राष्ट्र-मुक्ति सेना ने क्रांतिकारियों का साथ दिया। धीरे धीरे यह क्रांति दक्षिण चीन के विभिन्न प्रान्तों में फैल गया। युआन डर गया और उसने सम्राट बनने का दावा छोड़ दिया। इसी बीच 6 जून, 1916 को उसका निधन हो गया। उसके मृत्यु के बाद ही कपोल-कल्पित

(Phantom Republic) का आधा जीवन भी समाप्त हो गया।

विदेश नीति — युआन शिकाई आजीवन विदेशियों के प्रभाव में रहा। अप्रैल 1912 में उसने एक विज्ञप्ति में कहा हमारे देश के लोगों को सच्चे रूप से विदेशियों के साथ सम्बंध कायम करना चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण बात है। मंचू सरकार के अस्तित्व के समय विदेशियों ने जितनी भी संधियाँ चीन के साथ की हैं, उन संधियों को उचित मानना चाहिए और उन संधि-शर्तों को हमें शीघ्र कार्यान्वित करना चाहिए। 1912-13 में युआन ने स्वीकार किया कि उत्तरी पूर्वी चीन में जापान के मंगोलिया के रूस के और तिब्बत में ब्रिटेन के हित हैं। अमरीका को हुआई नदी का विकास करने तथा उत्तरी चीन के संचित तेल का निरीक्षण करने का अधिकार दे दिया गया। फलतः अमरीका की सहानुभूति युआन शिकाई को प्राप्त होने लगी

युआन ने परामर्शदाता के रूप में अनेक विदेशियों को अपने शासन के उच्च पदों पर बहाल किया। जापान ने नगाओ रिंगा और अमरीका से डॉ० फ्रैंक जे० गुडनाव आमंत्रित किए गए। ये दोनों युआन सरकार के वैधानिक सलाहकार थे। फ्रैंक ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा," चीन में गणतंत्र की अपेक्षा राजतंत्रिक प्रथा अधिक उपयुक्त है। जिस देश में लोगों का बौद्धिक स्तर अधिक ऊँचा नहीं है वहाँ गणतंत्रिक सरकार सबसे खराब सरकार हो जाती है। रिंगा और गुडनाव दोनों ने चीन में राजतंत्रात्मक सरकार की स्थापना पर जोर दिया।

युआन ने विदेशियों से कर्ज भी लिया। विदेशियों ने युआन को विश्वासी सेवक माना और यह सोचा कि इस विश्वासी सेवक को ऋण देकर सहायता दी जाय, तो यह आर्थिक दृष्टिकोण से मजबूत होकर क्रांतिकारियों का दमन करेगा और चीन

मे उनके साम्राज्यवाद का विस्तार होगा।
किंतु विदेशियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करके भी युआन शिकाई उन्हें अपना सच्चा मित्र नहीं बना सका। प्रथम विश्वयुद्ध के समय यह बात स्पष्ट हो गई। युद्ध में चीन तटस्थ रहना चहता था। लेकिन विदेशियों उसे युद्ध में घसीटना चाहते थे। जापान ने चीन पर आक्रमण कर कियाऊ चाऊ पर अधिकार कर लिया। इसके प्रसिद्ध बंदरगाह सिंगताओ पर भी जापान का अधिकार हो गया। इतना ही नहीं, जापान ने चीन के सामने इक्कीस माँग रखी और युआन को यह प्रलोभन दिया कि यदि वह इन माँगों को स्वीकार कर लेगा तो सम्राट बनने में वह उसकी मदद करेगा। अभी से कुछ माँगे निम्नलिखित थी
(क) जापान कियाऊ चाऊ पर अपना प्रभाव कायम करने का प्रयास करेगा।
(ख) जापान शांतुंग क्षेत्र में रेल-मार्ग का निर्माण करेगा।